“पाप एवं मृत्यु कहां से आए?”

I. सृष्टि की रचना में ज़्या बनाया गया था?

1. परमेश्वर ने ______________ और ________________ की सृष्टि की। उत्पज़ि 1:1
2. परमेश्वर ने देखा कि उसका बनाया हुआ सब कुछ, ___________ था। उत्पज़ि 1:31

II. अदन की वाटिका के बीच में ज़्या था?

1. अदन की वाटिका में ____________ का वृक्ष और ______________ या _____________ के ज्ञान का वृक्ष भी लगाया गया था। उत्पज़ि 2:9
2. भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने पर उन्होंने _________________ जाना था। उत्पज़ि 2:17

III. अदन की वाटिका में हव्वा बहकावे में कैसे आई?

1. सर्प ने कहा था, ‘‘ज़्या यह सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न ______________________ ? ’’ उत्पज़ि 3:1
2. हव्वा को मालूम था कि परमेश्वर ने कहा था कि फल खाने से वह अवश्य ही ____________________जाएगी। उत्पज़ि 3:3
3. सर्प ने कहा:
   क. _____________________________ उत्पज़ि 3:4
   ख. _____________________________ उत्पज़ि 3:5
   ग. _____________________________ उत्पज़ि 3:5
4. हव्वा ने देखा कि फल:
   क. _____________________________ उत्पज़ि 3:6
   ख. _____________________________ उत्पज़ि 3:6
   ग. _____________________________ उत्पज़ि 3:6

IV. भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने का परिणाम ज़्या हुआ?

1. दोनों की आंखें ____________________ उत्पज़ि 3:7
2. सर्प को अपने ______________________ चलना पड़ा। उत्पज़ि 3:14
3. स्त्री के गर्भवती होने की ____________ बढ़ जानी थी और पुरुष ने उस पर _______________ करनी थी। उत्पज़ि 3:16
4. भूमि ______________________ हो जानी थी उत्पज़ि 3:17 और मनुष्य ने _________________ में लौट जाना था। उत्पज़ि 3:19
5. परमेश्वर ने कहा, ‘‘मनुष्य ________________________और ____________________ का ज्ञान पाकर _________________ में से एक के समान हो गया है।’’ उत्पज़ि 3:22

V. क्या बच्चों को संसार में जन्म लेते समय भले-बुरे का ज्ञान होता है?

1. बच्चों को भले-बुरे का ज्ञान ________________ होता। व्यवस्था. 1:39
2. बच्चों को बुरे को ____________________ और भलाई को ____________________ नहीं आता। यशायाह 7:16
3. यदि कोई अंधा है, तो उसमें ________________ नहीं है। यूहन्ना 9:41

VI. क्या बच्चे जन्म से पापी होते हैं और स्वर्ग के राज्य से बाहर हैं?

1. पुत्र______________ के अधर्म का भार नहीं उठाता। यहेजकेल 18:20
2. परमेश्वर मनुष्य के भीतर ______________________ को रचता है जकर्याह 12:1 , और आत्माओं का ______________________ है। इब्रा. 12:9 (सभो. 12:7 भी देखिए।)
3. स्वर्ग का राज्य छोटे ______________________ का है। मत्ती 19:14

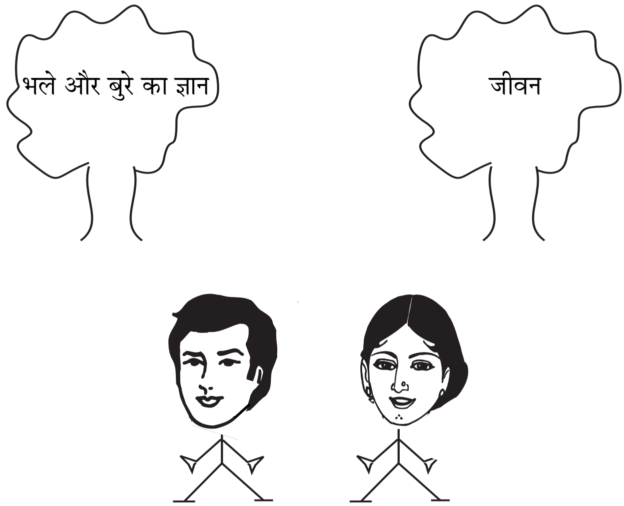

आंखें खुल गईं
परमेश्वर की तरह-भले और बुरे को जानते हैं

बच्चे पापी हैं:
1. अपने कामों के कारण? <u>नहीं</u>
2. माता-पिता के कारण, शरीर के द्वारा? <u>नहीं</u>
3. परमेश्वर के कारण, आत्मा के द्वारा? <u>नहीं</u>

अध्ययन शीट प्रस्तुत करना:

''पाप एवं मृत्यु कहां से आए?''

''पाप एवं मृत्यु कहां से आए?'' की यह अध्ययन शीट शुरुआत करने के लिए एक अच्छा अध्ययन साबित हो सकती है ज़्योंकि इसके आधार पर अगले पाठ तैयार हो सकते हैं।

उद्देश्य

''पाप एवं मृत्यु'' शीट का उद्देश्य यह दिखाना है कि यद्यपि पाप व शारीरिक मृत्यु आदम और हव्वा के पाप के *परिणाम* के रूप में संसार में आए, परन्तु बाद की पीढ़ियां उनके पाप के कारण *दोषी* नहीं थीं। आदम और हव्वा के पाप के कारण परमेश्वर की अच्छी सृष्टि कलंकित हो गई थी।

पाठ का संक्षेप

संक्षेप में, इस पाठ से पता चलता है कि परमेश्वर ने सब कुछ अच्छा ही बनाया था, परन्तु पाप के कारण परमेश्वर ने अपनी अच्छी सृष्टि को शाप दे दिया था। संसार में पाप और भले-बुरे का ज्ञान आदम और हव्वा के पाप के कारण ही आया। नवजात शिशु पर आदम और हव्वा के पाप के परिणाम का प्रभाव (अर्थात मृत्यु) तो होता है, परन्तु जन्म के समय उस पर आदम और हव्वा के पाप का दोष नहीं होता।

परिचय

[सीखने वाले को इस पाठ के लिए तैयार करने के लिए, शिक्षक को यह जान लेना चाहिए कि वह बाइबल से कितना परिचित है। अच्छी शुरुआत निम्न प्रकार से हो सकती है (नीचे दी गई बातों में एक-एक करके विस्तार से बताया गया है कि एक पाठ को प्रस्तुत करने के लिए शिक्षक को ज़्या करना चाहिए):]

मैं आपके समझदार होने पर संदेह नहीं करना चाहता, परन्तु मैं चाहता हूं कि बिल्कुल ही निचले स्तर से आरज़्भ किया जाए ताकि मुझे पता चल जाए कि आपको बाइबल की प्रकृति और बनावट की कितनी समझ है। ज़्या आप जानते हैं कि बाइबल के दो मुज़्य भाग हैं? वे दो मुज़्य भाग कौन से हैं?

ज़्या आप जानते हैं कि पुराने और नये नियम में से बड़ा भाग कौन सा है ? [यह देखने के लिए कि कौन से भाग में अधिक पृष्ठ हैं, बाइबल को वहां से खोलिए जहां से नया नियम शुरू होता है और फिर दोनों नियमों के आकार में तुलना करके दिखाइए।]

बाइबल बहुत से लेखकों के लेखों का एक संग्रह है। बाइबल में कुल 66 किताबें हैं। पुराने नियम में 39 और नये नियम में 27 पुस्तकें हैं।

बाइबल की पुस्तकों का आकार 2 यूहन्ना के एक से लेकर, भजन संहिता की तरह बहुत से पृष्ठों तक, अलग-अलग है। प्रत्येक पुस्तक को अध्यायों में और फिर उनके भागों में बांटा गया है। कुछ लोग इन उपभागों को आयतें कहते हैं, कुछ पद और कई लोग इन्हें वचन भी कहते हैं। परन्तु हम इस पुस्तक में उपभागों के लिए आयत शज़्द ही इस्तेमाल करेंगे।

पुराने नियम में चार प्रमुख भाग हैं: व्यवस्था की 5 पुस्तकें, इतिहास की 12 पुस्तकें, बुद्धि व आराधना की 5 पुस्तकें और भविष्यवाणी की 17 पुस्तकें, जिन्हें कभी-कभी उन किताबों में पाई जाने वाली सामग्री के आधार पर बड़े नबियों की 5 पुस्तकें और छोटे नबियों की 12 पुस्तकें कहा जाता है। बड़े नबियों की पुस्तकें छोटे नबियों की पुस्तकों से बड़ी हैं।

नये नियम में भी 4 प्रमुख भाग हैं: यीशु के जीवन तथा शिक्षा पर 4 पुस्तकें, इतिहास की 1 पुस्तक, 21 पत्रियां (कई बार इन्हें 13 पौलुस की पत्रियां और 8 साधारण पत्रियों में बांटा जाता है), और भविष्यवाणी की 1 पुस्तक।

इस पाठ में हम बाइबल के प्रारज़्भ से लेकर ''पाप एवं मृत्यु कहां से आए ?'' [देखें पृष्ठ 105] अध्ययन शीट पर विचार करते हुए सृष्टि की रचना से आरज़्भ करेंगे।

I. सृष्टि

1. सृष्टि की रचना में ज़्या-ज़्या था? आरज़्भ में परमेश्वर ने ज़्या-ज़्या बनाया? [सीखने वाले को बाइबल में उत्पज़ि 1:1 पढ़ाएं]। परमेश्वर ने *ज़्या* बनाया? [उसे उज़र देने दें। ''आकाश'' और ''पृथ्वी'' शज़्दों से रिज़्त स्थान भर दें।]

2. परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को बनाकर उसे कैसी पाया ? [उसे उत्पज़ि 1:31 पढ़ाएं।] परमेश्वर की सृष्टि *कैसी* थी ? [उसे उज़र देने दें। रिज़्त स्थान में ''अच्छा'' भर दें।]

ज़्या कोई ऐसी वस्तु है जिसका अस्तित्व हो और उसे परमेश्वर ने न बनाया हो? ज़्या परमेश्वर की बनाई हर वस्तु अच्छी थी ? यदि परमेश्वर की बनाई हुई हर वस्तु अच्छी थी, तो अब सब कुछ अच्छा ज़्यों नहीं है ? इस अध्ययन में आगे हम यही जानने की कोशिश करेंगे।

II. अदन की वाटिका में

1. अब हम अदन की वाटिका पर विचार करेंगे। अदन की वाटिका के बीच में ज़्या था ? [सीखने वाले से उत्पज़ि 2:9 पढ़ने को कहें।] वाटिका के बीच में दो वृक्ष थे ? वाटिका के बीच के दो वृक्षों को *ज़्या नाम* दिए गए थे ? [''जीवन'' और ''भले'' और ''बुरे'' से रिज़्त स्थान भरें।]

[अध्ययन शीट को पलटें, और *पिछली ओर* दो वृक्ष बनाकर उन्हें ''भले और बुरे के

ज्ञान'' और ''जीवन'' का नाम दें। यह देखने के लिए कि इस पाठ के लिए आपका चित्र कैसा होगा पृष्ठ 106 पर रेखाचित्र देखें। केवल दो ही वृक्ष *बनाएं,* तथा आदम और हव्वा को दिखाने के लिए छड़ी चित्र बनाकर उनके सिर बड़े परन्तु आंखें छोटी रेखा से बनाएं। आप पाठ की उस सामग्री तक आने के लिए जिसमें शीट के पीछे के चित्र में और सुझाव हैं, प्रतीक्षा करें।]

बाइबल में नामों का विशेष महत्व है। आपको ज़्या लगता है कि उन्हें ''जीवन का वृक्ष'' और ''भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष'' ज़्यों कहा गया था? ज़्या आपको लगता है कि उन वृक्षों को ''जीवन'' और ''भले और बुरे का ज्ञान'' इसलिए कहा गया था ज़्योंकि उनके फल खाकर आदम और हव्वा को वृक्ष के नाम के अनुसार परिणाम मिलना था।

2. परमेश्वर ने ज़्या कहा था कि यदि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाएंगे तो ज़्या होगा? [उसे उत्पज़ि 2:17 पढ़ने के लिए कहें।] यदि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाते तो उन्हें *ज़्या* होना था? [रिज़्त स्थान में ''मर'' भरें।]

इस भाग में हमने ज़्या सीखा है? हमने सीखा कि परमेश्वर हमें हमारे किए गए कामों के लिए उज़रदायी ठहराता है। हम जो कुछ भी करते हैं वह शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक या आत्मिक रूप से किसी न किसी प्रकार हमें प्रभावित करता है। इन वृक्षों के फल खाने से उनके जीवन प्रभावित होने थे।

III. अभिलाषा

1. अब हम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाने के लिए हव्वा की अभिलाषा पर विचार करेंगे। सांप ने उसे कैसे बहकाया? [सीखने वाले से उत्पज़ि 3:1 पढ़ने को कहें।] उसने उसे भरमाने या बहकाने के लिए *ज़्या* कहा? [रिज़्त स्थान में ''खाना'' भर लें।] इससे हव्वा ज़्यों बहकावे में आ गई? ज़्या वह बहकावे में इसलिए आई ज़्योंकि इससे उसके मन में परमेश्वर की बात पर संदेह पैदा हो गया था?

2. ज़्या हव्वा को पता था कि उस पेड़ के फल से खाकर वह मर जाएगी? [उसे उत्पज़ि 3:3 पढ़ने दें।] हव्वा ने *ज़्या* कहा कि परमेश्वर ने उसे कहा था कि यदि वह उस वृक्ष के फल से खाए तो ज़्या होगा? [रिज़्त स्थान में ''मर'' भर लें।]

3. सर्प का उज़र ज़्या था? [उसे उत्पज़ि 3:4, 5 पढ़ने दें।] सांप ने *ज़्या* कहा कि नहीं होगा, और उसने कौन सी दो बातें कही कि *होंगी?* [क. के स्थान पर ''तुम निश्चय न मरोगे''; ख. के स्थान पर ''तुज़्हारी आंखें खुल जाएंगी'' ग. के स्थान पर ''तुम भले बुरे का ज्ञान पा लोगे'' भरें।]

इनमें से सर्प की कौन सी बातें गलत हैं और कौन सी सही? ज़्या उन्होंने मर जाना था? हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर ने कहा था कि वे मर जाएंगे। अत: यह सही है। परन्तु इसका अर्थ ज़्या था कि उनकी आंखें खुल जाएंगी और वे भले और बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाएंगे? ज़्या ये दोनों बातें सही हैं या गलत? इनके बारे में हम पाठ में आगे समझेंगे।

4. हव्वा को वह फल देखने में कैसा लगा? [उसे उत्पत्ति 3:6 पढ़ाएं।] उस वृक्ष के फल के सम्बन्ध में हव्वा को *कौन सी* तीन बातें मिलीं? [क. में ''खाने में अच्छा''; ख. में ''देखने में मनभाऊ''; और ग. में ''बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य'' भर लें।] क्या हव्वा का ध्यान उस वृक्ष के फल की अच्छी बात पर था या बुरी पर? क्या वह वृक्ष के बुरे प्रभाव पर ध्यान देने में असफल रहने के कारण बहकावे में आई थी?

ध्यान दें कि वृक्ष के फल की जिन बातों से हव्वा आकर्षित हुई, वे 1 यूहन्ना 2:16 में उल्लेखित संसार की वस्तुएं हैं। हम अपने आपको उससे मिला सकते हैं, क्योंकि हम संसार की वस्तुओं के उसी आकर्षण से पाप में फंसते हैं।

हव्वा ने यह पता होने के बावजूद कि भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने से वह मर जाएगी, फल खाया। हम भी यह जानते हुए कि हम जो कर रहे हैं वह पाप है बहुत सी ऐसी बातें करते हैं जो गलत होती हैं। शायद इसीलिए हमें हव्वा पर उसके किए के लिए दया करनी चाहिए।

IV. परिणाम

1. अब हम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल खाने के परिणामों पर विचार करेंगे। आदम और हव्वा की आंखों को क्या हुआ? [उसे उत्पत्ति 3:7 पढ़ने दें।] उनकी आंखें *क्या* हो गई थीं? [रिक्त स्थान में ''खुल गईं'' भर लें। *पिछली ओर* आदम और हव्वा दिखाने के लिए खुली आंखों वाला रेखाचित्र बनाएं। देखें पृष्ठ 106।]

क्या इसका अर्थ यह है कि वे बाग में आंखें बंद करके घूमते थे? क्या इसका अर्थ यह नहीं कि उनकी आंखें नैतिकता के लिए अर्थात भले और बुरे के ज्ञान के लिए बंद थीं, और उस वृक्ष का फल खाने से भले और बुरे के लिए उनकी आंखें खुल गई थीं। वृक्ष का फल खाने से पहले उन्हें भले और बुरे की चिंता नहीं थी क्योंकि उन्हें भले-बुरे का ज्ञान ही नहीं था, परन्तु उनकी आंखें खुलते ही उन्हें यह अहसास हो गया था कि वे नंगे हैं। उनमें नैतिक विवेक आ गया था।

2. सर्प को दण्ड कैसे दिया गया था? [उत्पत्ति 3:14 पढ़ें।] इसके बाद उसने *किस के बल* रेंगना था? [रिक्त स्थान में ''पेट के बल'' भर लें।]

3. स्त्री को क्या दण्ड मिलना था? जन्म देते समय उसके लिए *क्या* बढ़ना था, और पुरुष ने उस पर *कितना* अधिकार रखना था? [रिक्त स्थानों पर ''पीड़ा'' और ''प्रभुता'' भर लें।]

4. परमेश्वर ने भूमि को *क्या* किया? [उत्पत्ति 3:17 पढ़ें, और रिक्त स्थान में ''शापित'' भर लें।] परमेश्वर ने आदम को और क्या दण्ड देने की प्रतिज्ञा की? [उत्पत्ति 3:19 पढ़ें।] आदम ने *किस* में लौट जाना था? [रिक्त स्थान में ''मिट्टी'' भर लें।]

5. क्या आदम और हव्वा का स्वभाव वृक्ष का फल खाने से विकृत हो गया था? [उत्पत्ति 3:22 पढ़ें।] मनुष्य किस प्रकार परमेश्वर के तुल्य हो गया था? मनुष्य को *क्या* पता चल गया था? [रिक्त स्थान में ''भले'' और ''बुरे'' भर लें। परमेश्वर ने मनुष्य को

किसके जैसा बन गया कहा ? [रिक्त स्थान में "हम" भर लें ।] *पीछे* आदम और हव्वा के नीचे लिख लें, "आंखें खुल गईं। परमेश्वर की तरह भले और बुरे का ज्ञान रखते हैं।" देखें पृष्ठ 106 ।]

यदि भले और बुरे का ज्ञान पाने का अर्थ है कि इससे आदम और हव्वा भ्रष्ट हो गए तो इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर भी विकृत स्वभाव का है क्योंकि उसे भी भले और बुरे का ज्ञान है ।

भले और बुरे का ज्ञान पाने में भले और बुरे में अन्तर करने की योग्यता भी शामिल है, जिस ज्ञान का अर्थ यह होगा कि मनुष्यजाति को अब नैतिक पसन्द चुनने में दुविधा होगी।

मनुष्य अब बुराई करने के लिए बहक सकता था। इससे पहले, उन्हें नैतिक निर्णय लेने की कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि उन्हें भले और बुरे का ज्ञान ही नहीं था। अब वे गलत पसन्द चुन सकते थे और यह पसन्द पापपूर्ण होनी थी। फल खाने से पहले उन्हें भले और बुरे का ज्ञान नहीं था और इस कारण वे पाप करना नहीं चुन सकते थे।

V. क्या बच्चों को जन्म के समय भले और बुरे का ज्ञान होता है ?

1. क्या बच्चों को संसार में जन्म लेते समय भले और बुरे *का ज्ञान* होता है ? [व्यवस्था. 1:39 पढ़ें। रिक्त स्थान में "नहीं" भरें ।]

2. क्योंकि उन्हें भले और बुरे का ज्ञान नहीं होता, इसलिए क्या वे भला या बुरा करना चुन सकते हैं ? [यशायाह 7:16 पढ़ें ।] उन्हें *क्या* करना नहीं आता ? [रिक्त स्थान में बुरे को "त्यागना" और भले को "ग्रहण करना" भर लें ।]

3. यदि कोई भले और बुरे में से चुनना नहीं जानता, तो वह पाप कैसे कर सकता है ? [यूहन्ना 9:41 पढ़ें ।] यदि कोई अंधा है, तो उसमें *क्या नहीं* है ? [रिक्त स्थान में "पाप" भर लें ।]

"अंधे" से यीशु का क्या अभिप्राय है ? क्या वह शारीरिक अंधेपन की बात कर रहा है ? क्या "अंधा" कहने का उसका भाव देखने अर्थात समझने की अयोग्यता नहीं है ? क्या यीशु यह नहीं सिखा रहा था कि जो व्यक्ति समझने में असमर्थ है उसे जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता, और इस कारण परमेश्वर द्वारा उसे पापी नहीं माना जाता ? क्या बच्चे भी इसी श्रेणी में नहीं आते ?

VI. क्या बच्चे जन्म के समय पापी होते हैं ?

1. जिस प्रकार भले और बुरे का ज्ञान पाए बिना कोई पाप नहीं कर सकता, क्या बच्चों के लिए अपने माता-पिता से पाप विरासत में पाना और इस कारण संसार में पापी पैदा होना सम्भव है ? क्या पुत्र पिता के पाप का बोझ उठाता है ? [पढ़ें यहेज. 18:20] पुत्र *किसका* पाप नहीं उठाता ? [रिक्त स्थान में "पिता" भर लें ।] क्या यह आयत यह सिखाती है कि हर व्यक्ति परमेश्वर के सामने अपने ही पापों के लिए जिम्मेदार है, अपने माता-पिता के पापों के लिए *नहीं ?*

परिणाम और *दोष* में अन्तर करता हुआ रेखाचित्र बनाना न भूलें। हम सब आदम और हव्वा के पाप के परिणाम के कारण मरते हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमें उनके पाप के कारण दोषी ठहराकर पापी माना जाता है। यदि कोई व्यज़्ति अपने बच्चों को पीटकर मार देता है, तो उन्हें उसके पाप का परिणाम भुगतना पड़ेगा, परन्तु उसके पाप के कारण वे दोषी *नहीं* ठहरेंगे।

2. बच्चे को आत्मा कहां से मिलती है? [जकर्याह 12:1 पढ़ें।] परमेश्वर मनुष्य के अन्दर *ज़्या* रचता है? [रिज़्त स्थान में ''आत्मा'' भर लें।] आत्माओं का पिता कौन है? [इब्रा. 12:9 पढ़ें।] परमेश्वर आत्माओं का *ज़्या* है? [रिज़्त स्थान में ''पिता'' भर लें।]

इस तथ्य का कि हमें आत्मा परमेश्वर की ओर से मिलता है (सभो. 12:7 पर भी विचार करें), इसका अर्थ है कि हमारा जन्म संसार में पापी आत्मा से नहीं होता, ज़्योंकि यदि हमारा जन्म पापी आत्मा से हुआ, तो परमेश्वर ही बुराई का देने वाला है, जो कि, नि:संदेह, सज़्भव नहीं है (याकूब 1:13)।

3. स्वर्ग का राज्य कैसे लोगों का है? [मज़ी 19:14 पढ़ें।] स्वर्ग का राज्य उन लोगों का है जो *किसकी* तरह हैं? [रिज़्त स्थान में ''बच्चों'' भर लें]। यदि छोटे बच्चे बुरे और पापी हैं, तो स्वर्ग का राज्य उन लोगों का है जो उनकी तरह हैं। परन्तु यदि छोटे बच्चे पवित्र, विनम्र व भोले हैं तो स्वर्ग का राज्य ऐसे लोगों का है जो उनके जैसे हैं। निश्चय ही स्वर्ग का राज्य उन लोगों का है जो छोटे बच्चों की तरह पवित्र, विनम्र और भोले हैं।

[अध्ययन शीट (देखिए पृष्ठ 106) के पीछे लिखें, ''बच्चे पापी हैं'':

1. अपने कामों के कारण? _______________
2. शरीर के द्वारा अर्थात माता-पिता के कारण? _______________
3. आत्मा के द्वारा अर्थात परमेश्वर के कारण? _______________

उसे रिज़्त स्थान भरने दें। इस पाठ से यह समझ आ जानी चाहिए कि तीनों प्रश्नों का उज़र, ''नहीं'' ही है।]

निष्कर्ष

[पाठ को समाप्त करते हुए, यह देखने के लिए कि सीखने वाला सही उज़र दे सकता है, शिक्षक मुज़्य शीर्षकों में से प्रश्न पूछता हुआ पाठ के पीछे जाए। शिक्षक को चाहिए कि वह प्रश्न पूछकर छात्र को उनका उज़र देने दे।] इस पाठ को समाप्त करने का एक अच्छा ढंग पाठ के मुज़्य प्रश्नों का उज़र देना है।

I. *सृष्टि की रचना में ज़्या-ज़्या शामिल था?* सही उज़र है ''बहुत अच्छा आकाश और पृथ्वी।''

II. *अदन की वाटिका के बीच में ज़्या था?* जीवन का वृक्ष और भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष, जिसका फल खाने से उन्होंने मर जाना था।

III. *अदन की वाटिका में हव्वा कैसे बहकावे में आई?* सर्प ने हव्वा के मन में परमेश्वर के प्रति संदेह पैदा किया, ताकि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के आकर्षित

करने वाले गुणों पर विचार करे, चाहे उसे मालूम था कि वह मर जाएगी। सर्प ने उससे कहा था कि यदि वह उस फल से खा ले तो मरेगी नहीं, और कहा कि भले और बुरे का ज्ञान पाकर वह परमेश्वर के तुल्य हो जाएगी।

IV. *भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने का ज़्या परिणाम हुआ?* सर्प को अपने पेट के बल चलने का श्राप मिला। स्त्री के जन्म देने की पीड़ा बढ़ जानी थी और पुरुष को उस पर प्रभुता करनी थी। भूमि श्रापित हो जानी थी। उनकी आंखें खुल गईं जिससे वे भले और बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो गए। उन्होंने मिट्टी में लौट जाना था अर्थात मर जाना था।

V. *ज़्या बच्चों को संसार में जन्म लेते समय भले और बुरे का ज्ञान होता है?* संसार में बच्चों को जन्म के समय भले और बुरे का ज्ञान *नहीं* होता, और इसी कारण वे पाप रहित हैं।

VI. *ज़्या बच्चे जन्म के समय पापी होते हैं और स्वर्ग के राज्य से बाहर होते हैं?* पुत्र पिता के पाप का दोषी नहीं होता और परमेश्वर उसमें मनुष्य का आत्मा रचता है। इसलिए, बच्चा जन्म के समय पवित्र और पाप रहित होता है। स्वर्ग का राज्य उन लोगों का ही है जो छोटे बच्चों की तरह हैं।

[शिक्षक छात्र से पूछे: ज़्या तुज़्हारा बपतिस्मा बचपन में हुआ था? ज़्या तुज़्हें पता है कि तुज़्हारा बपतिस्मा कब हुआ था? ज़्या तुज़्हें जन्म के समय पापी मानकर दोषी ठहराया गया था?

यदि शिक्षक भजन 51:5 पर विचार करता है तो यह अच्छा होगा, इस आयत का इस्तेमाल एक बच्चे को पापी सिद्ध करने के लिए किया जाता है। कई तो इस आयत को उस अध्ययन शीट के विपरीत यह सिद्ध करने के लिए इस्तेमाल करेंगे कि बच्चे जन्म के समय पापी होते हैं। ऐसा वे NIV और NRSV जैसे अनुवादों या इस आयत के दुरुपयोग से करते हैं। मूल भाषा, इब्रानी में केवल इतना ही है, ''देख, मैं अधर्म में उत्पन्न हुआ, और पाप में अपनी माता के गर्भ में पड़ा।''

इस आयत से लगता है कि दाऊद अपने आपको इतना नीचे गिरा रहा है कि वह अपने जीवन की उन कमियों पर विलाप करता है जो उस दूषित वातावरण से उसे मिली थीं जिसमें उसका जन्म हुआ था। यदि यह सही है, तो वह यही कह रहा था, ''मैं इस गंदे माहौल में घिरा हुआ हूं जिसमें मेरा जन्म हुआ था और अपने अस्तित्व के आरज़्भ से ही इससे प्रभावित हूं।''

बहुत ही सरल ढंग से इसकी तुलना बर्फीले क्षेत्र में ठण्ड और बर्फ वाले दिन किसी के यह कहने से की जा सकती है, ''मैं बर्फीले तूफ़ान में अपनी माता के गर्भ में पड़ा, और गिरती बर्फ़ में घनी कोहरी रात में मेरा जन्म हुआ। आश्चर्य नहीं कि मैं ऐसे वातावरण में पला-बढ़ा हूं।''

इस वाज़्य का अर्थ यह नहीं होगा कि उसे लगता था कि बर्फीले तूफान में जन्म लेने के कारण वह जन्म के समय बर्फ का कोई गोला था। इसी प्रकार दाऊद का कथन कि वह

अधर्म में उत्पन्न हुआ और पाप में अपनी माता के गर्भ में पड़ा, किसी भी प्रकार यह अर्थ नहीं देता कि दाऊद अपने आपको जन्म से पापी मानता होगा। इस कथन में केवल उसके जन्म के आस पास की परिस्थितियों पर ही विचार किया गया है परन्तु दाऊद के जन्म के बाद के स्वभाव का कोई वर्णन नहीं है। यह निष्कर्ष निकालना कि वह जन्म के समय पापी था, एक ऐसा निष्कर्ष है जिसका संकेत इस आयत के मूल अर्थ में नहीं मिलता।

शिक्षक को इस ओर भी ध्यान दिलाना चाहिए कि परमेश्वर आदम और हव्वा को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल इसलिए भी खाने नहीं देना चाहता होगा कि वह उन्हें दुख, निराशा और दोष से बचाना चाहता था जो भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाकर आने थे। कई बार हो सकता है कि हमें लगे कि परमेश्वर हमारे भले की किसी वस्तु से हमें वंचित करता है, परन्तु परमेश्वर जब भी किसी बात के लिए मना करता है, तो वह हमारे भले के लिए ही होता है।

यह सुनिश्चित करने के बाद कि सीखने वाले को पाठ की समझ आ रही है, अगले अध्ययन के लिए समय निर्धारित कर लें।]